ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-4* July- 2017
Anthology : The Research

''जनसंख्या का स्वरूप''(पिथौरागढ़ जनपद के सन्दर्भ में)

चन्द्रावती भट्ट
असिस्टेंन्ट प्रोफेसर
भूगोल
एल एस एम राजकीय स्तातकोत्तर महाविद्यालय
पिथौरागढ़(उत्तराखण्ड)

सारांश

मानव सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है मानव की प्राथमिक आवश्यकता एवं जिज्ञासा ने ही सभ्यताओं को जन्म दिया है। मानव अपनी जिज्ञासा एवं वुद्धि से प्राचीन समय से प्रकृति के साथ सामजस्य स्थापित कर धरातल के परिदृश्यों एवं परिवेश को बदलता आ रहा है। वर्तमान युग तकनीकि एवं प्रौद्योगिकी का है, जनसंख्या का निरन्तर विकास होता आया है, जिससे पर्यावरण की मौलिकता में ह्रास होता गया। मानव की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप वर्तमान सांस्कृतिक भू–दृश्य सामने आया। मध्य हिमालय में स्थित नवसृजित राज्य उत्तराखण्ड के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के जनसंख्या स्वरूप में परिवर्तन आया है। जैसे जनसंख्या वृद्धि, वृद्धिदर, लिंगानुपात आदि में विषमताऐं एक जटिल समस्या है। जनसंख्या वृद्धि स्थानान्तरण एवं पलायन का प्रभाव पारिस्थितिकी तन्त्र पर पड़ रहा है जिसके प्रमाण पर्यावरण में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाऐं एवं संसाधनों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित है। जनपद के विकास, समृद्धि एवं सुदृढ़ता के लिए जनसंख्या के स्वरूप का अध्ययन अति आवश्यक है। जिससे भविष्य में आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं पर नियंत्रण हो सके।

मुख्य शब्दः जनसंख्या, जनसंख्या वृद्धि, पर्यावरण संसाधन, गुणवत्ता, पलायन, संस्कृति, विकास

प्रस्तावना

भारत के उत्तरी पर्वतीय भाग मध्य हिमालय के हिमाच्द्वादित पर्वत श्रखलाओं की तलहटी में नव सृजित उत्तराखण्ड राज्य का सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ अर्न्तराष्ट्रीय सीमाओं पर स्थित है। इसे वर्ष 1960 को अल्मोडा जनपद से अलग किया गया। यह हिमाच्छादित शिखरों, बुग्यालों, वनस्पतियों, अलोकिक दश्यों, प्राकृतिक छटाओं, प्राचीन घरोहर, सांस्कृतिक परम्पराओं, शुद्व पर्यावरण एवमं राजनैतिक दृष्टि से विशिष्ट स्थान लिए है। पर्यावरण में आने वाले परिर्वतनों जैसे– आपदाऐ, प्रदूषण , जैव विविधता, का जिम्मेदार मानव है। मानव सृष्टि का विशिष्ट प्राणी है। मानव की जिज्ञासा, बुद्वि एवं विवेक से आज तकनीकि ज्ञान चरम सीमा में पहुच गया है। वर्तमान समय में निरन्तर विकास से पर्यावरण की गुणवत्ता में ह्रास हुआ है। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए जनसंख्या के स्वरूप का अध्ययन अति आवश्यक है। क्योकि क्षेत्र के विकास में मानव ही उत्कृष्ठ प्राणी है। जो अपनी जिज्ञासा बुद्वि–विवेक से आवश्यकताओं की पूति के लिए क्रियाऐं एवं प्रतिक्रियाऐं करता रहता है। जिससें पर्यावणीय गुणवत्ता प्रभावित होती है।

अध्ययन क्षेत्र

पिथौरागढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 7218 वर्ग कि0 मी0 है। कुल जनसंख्या 483439 (वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार) है। राज्य की कुल जनसंख्या का 5.45 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या का 85.6 प्रतिशत ग्रामीण व 14. 40 प्रतिशत नगरीय है। पिथौरागढ़ जनपद का विस्तार 290.27। व 300.49। उत्तरी अक्षांश तक एवं $79^{0}50'$। पूर्वी देशान्तर से 810–1। पूर्वी देशान्तर तक फैला है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए जनंसख्या का अध्ययन अति आवश्यक है। जिससे अनुकूलतम जंनयख्या का आकलन किया जाता है। जंनसख्या के अध्ययन से एक ऐसी रूप–रेखा तैयार कियी जा सकती है। जिससें लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठा कर वहाँ पहुचाया जा सकता है, जहाँ पहुचनें की मानव आज के युग में कल्पना करता है। सदियों से आज तक की और उस भविष्य की जहाँ निम्न जीवन स्तर का अन्त है जो सम्पन्नता की किरणों से प्रज्वलित है।

अध्ययन विधि

1. सेन्सस हैण्ड बुक एवम् साख्यिकीय पत्रिका, साहित्यों एवम् अभिलेखों से आकडों का सकंलन।
2. आकडों का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक ढ़ग से अध्ययन किया।
3. 3 साक्षात्कार के आधार पर जनंसख्या के बारे में प्राचीन व वतर्मान के दृश्यों को अवलोकित किया।

जनसंख्या का विकास

देश के जनसंख्या विकास के साथ–साथ पिथौरागढ़ जनपद में भी जनसंख्या का क्रमशः विकास होता गया। घाटियों, मैदानों शहरों`में क्रमशः जनसंख्या में वृद्वि होती गयी। वर्ष 1901 से 2011 तक जनसंख्या का विकास होता गया है।

वर्ष 1901 सें 2011 तक जनसंख्या का विवरण निम्न है–

1901	1911	1921	1931	1941	1951
130486	151213	152967	167803	197718	222346
1961	1971	1981	1991	2001	2011
263579	415163	365202	416647	462149	483439

तलिका– स्रोत सैन्सस हैण्ड बुक 1961,स्रोत सैन्सस हैण्ड बुक 1971, 2001।

उपरोक्त आकडों से यह स्पष्ट होता है कि देश की जनसंख्या के साथ–साथ जनपद की जनसंख्या के आकार में परिर्वतन आया है। वर्ष 1972 में चम्पावत जिला अलग होने से 1981 में जनसंख्या कम है। वर्ष 1991–2001, 2011 में जनसंख्या में बृद्वि हुई है

जनसंख्या विवरण

पिथौरागढ़ जनपद के जनंसख्या के स्वरूप में प्रत्येक दशाप्दी में परिर्वतन हुआ है जिससे आकारिकी में भी परिर्वतन आया है।

पिथौरागढ़ जनपद में प्रत्येक दशाब्दी में जनसंख्या का विवरण निम्न है।

वर्ष	कुल जनसंख्या	महिला	पुरूष
1901	130486	64451	66035
1911	151213	74465	76748
1921	152567	76260	76307
1931	167803	83800	15236
1941	197718	99338	29915
1951	222346	112681	109655
1961	263579	135287	128292
1971	415163	210250	204913
1981	365202	184961	180241
1991	416647	207470	201177
2001	462149	227592	234557
2011	483439	244133	239306

तलिका–2 स्रोतः सैन्सस हैण्डबुक 1961 से 2001 तक

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि जनसंख्या वृद्वि में असमानता है। वर्ष 1901 से 1921 तक जनसंख्या की वृद्वि कम हुई है। इसका मुख्य कारण प्रथम विश्व युद्ध, अकाल, महामारी, एवम् द्वितीय विश्व युद्ध है। वर्ष 1951 के पश्चात जनसंख्या में विकास होता गया है। वर्ष 1972 में चम्पावत को अलग जिले का दर्जा दिया गया। क्रमशः वर्ष 1991 से जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्वि हुई है, जिसका अनुमान धरातल के परिदृश्य से सरलता पूर्वक लगाया जा सकता है। आवादी के साथ–साथ शहरों, सडको के किनार एवम् मुख्य क्रेन्द्रों, पर अनियत्रिंत निर्माण कार्य हो रहे है, जिससे धरातल के रूवरूप का परिदृश्य बदल चुका है। अन्न उत्पादक क्षेत्रों, समतल भाग एंव मुख्य केन्द्रों पर जन समूह है।

पिथौरागढ़ जनपद में जनसंख्या में दशकीय वृद्वि।

वर्ष	(वृद्वि प्रतिशत में)
1901–11	15.88
1911–21	0.90
1921–31	9.99
1931–41	17.83
1941–51	12.63
1951–61	19.96
1961–71	12.98
1971–81	16.38
1981–91	14.11
1921–2001	10.92
2001–2011	4.58

सैन्सस– ऑफ इण्डिया 2001

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि यहा के लोगो मे जागरूकता आयी उच्चजीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ, एवम् भौतिकवादी युग होने से जनसंख्या में वृद्वि का प्रतिशत धीरे–धीरे कम होता गया है। पिथौरागढ़ जनपद की वर्ष 1901 से 2011 तक की जनसंख्या वृद्वि के प्रतिशत देखने से स्पष्ट होता है कि यहाँ जनसंख्या वृद्वि क्रमशः प्रत्येक दशाप्दी में होती गयी है, लेकिन बृद्धि में असमानता रही है। प्राचीन समय में यह जनपद अल्मोडा जिले का तहसील था, सीमान्त जनपद, सुदूरवर्ती गॉव एवम् यातायात के साधनों से बंचित होते हुए आजीविका के लिए स्वयं संसाधनों का प्रयोग कर अपना सरल, शान्त, जीवन यापन करते थे। इस समय विश्व युद्ध ,सूखा अकाल, महामारी से जनसंख्या प्रभावित होती रही। जिससे वर्ष 1911–21 के मध्य 0.90 प्रतिशत वृद्वि हुई है। इसके पश्चात क्रमशः वृद्वि होती रही लेकिन वर्ष 1941–51 के मध्य इसका प्रतिशत घट कर 12.63 रह गया,वर्ष 1951–61 में वृद्वि का प्रतिशत बढ़ा। वर्ष 1960 में जिला बनने के पश्चात यहाँ की अर्थव्यवस्था की ओर ध्यान दिया गया। इसे यातायात, व्यापार शिक्षा एंव कृषि की सुविधायें सुभल करायी गयी वर्ष 1972 में चम्पावत तहसील अलग जनपद बनने से क्षेत्रफल कम हुआ। जिनका प्राव जनसंख्या बृद्धि पर पड़ा है।

वर्ष 1971–81 के मध्य का समय जनसंख्या विस्फोट का समय था, जिसमें जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी, देश की अर्थव्यवस्था बेरोजगारी आदि को देखते हुए जनसंख्या वृद्वि में रोक लगाना पड़ा इसमें परिवार नियोजन, शिक्षा, स्वाथ्य पर विशेष बल दिया गया। जनसंख्या वृद्वि का प्रतिशत कम हुआ, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिला और वर्ष 2001 से 2011 के मध्य जनसंख्या वृद्वि 4.58 प्रतिशत हुई।

लिंगानुपात

पुरूष–स्त्री अनुपात जनसंख्या संगठन का महत्तपूर्ण पहलू है। भौगौलिक स्वरूप के विश्लेषण के लिए स्त्री–पुरूष अनुपात महत्वपूर्ण है। यह प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या में से लिया जाता है।

पिथौरागढ़ जनपद में प्रतिहजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या वर्ष 1921 से 2011 तक निम्न है।

1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
999	998	1010	1028	1054	1026	1027	992	1031	1020

स्रोतः सैन्सस हैण्ड बुक 1961 जिला पिथौरागढ़– डाइरेक्ट्रेट ऑफ प्लानिग देहरादून उत्तरराखण्ड।

उपरोक्त विवरण में वर्ष 1921 से 2011 तक लिंगानुपात को दर्शाया गया है। वर्ष 1921 से 1941 तक प्रति हजार पुरूषों में स्त्रियों की संख्या कम तथा 1941 के पश्चात 1981 तक स्त्रियों की संख्या अधिक रही है। वर्ष 1991 में पुनः यह अनुपात कम हो गया। प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों के अनुपात में कमी आने से इसके लिए सरकार द्वारा भी बेटी बचाओं एंव भ्रूण हत्या पर अभियान एवं रोक लगाया गया, जिससें वर्ष 2001 में स्थिति में सुधार हुआ।

समस्या

जनपद में जनसख्या का असमान विवरण है। क्योकि पिथौरागढ जनपद की भौतिक बनावट, विषम ढाल, नदी घाटियाँ, संसाधन का उपयोग न होना, उत्पादन अपेक्षाकृत कम, यातायात, खाद्य समस्या, शिक्षा संस्थान, तकनीकी शिक्षा, प्रशिक्षण संस्थान, स्वास्थ सेवाऐं आपदाऐं भूकम्प सुदूरवर्ती क्षेत्र होने से मुख्य केन्द्रों की ओर जनसंख्या का समूहीकरण एंव सुदूरवर्ता गावों का निरन्तर खाली होना, एवम् पलायन प्रमुख समस्या है।जिससे यहाँ की जनसंख्या प्राकृतिक उपहार, औषधि जड़ी बूटियाँ, शुद्व पर्यावरण, प्राकृतिक अद्भुत सोन्दर्य, कृषि एवं जैव विविधता प्राचीन संस्कृति आदि से बंचित हो रही है। इनकी सुरक्षा क्षेत्रीय विकास के लिए यह जटिल समस्या बन कर सम्मुख आ रही है। क्षेत्रीय विकास के लिए संसाधनों के उपयोग की गुणवत्ता ही सर्वोपरि है।

सुझाव

क्षेत्र को खुशहाल बनाने के लिए जनसंख्या के स्वरूप का अध्ययन अति आवश्यक है।

1. प्राचीन समय से ही पहाड़ी पट्टियों पर्वत श्रंखलाओं एवम् हिमालयी क्षेत्रों में विरल जनसंख्या पायी जाती है। यहाँ के निवासियों को उचित सुविधाये देना अति आवश्यक है।
2. शहरीकरण प्रबल हो रहा है। 'शहर गॉव की और'' को एक लक्ष्य बनाकर शहरों की ओर स्थानान्तरित होने वाली जंनसख्या पर अंकुश लगाना है।
3. गांवों का विरान होने एवं शहरो में समूहीकरण से जनसंख्या एवं संसाधनों का सम्बन्ध एवं गुणवत्ता बनाये रखना आवश्यक है।
4. पारिस्थितिकी तन्त्र को सुरक्षित रखने के लिए मानव एवं संसाधन की गुणवत्ता सर्वोपरि है।
5. पर्यावरण में होने वाले परिर्वतन का जिम्मेदार मानव है। इसलिए मानव की क्रिया एवं प्रतिक्रियाओं के प्रतिफल को देखने हुए संन्तुलन का प्रयास आवश्यक है।
6. यहाँ की 85•6 प्रतिशत आबादी गॉवों में निवास करती है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि एंव पशुपालन है। कृषि के लिए सुविधाओं का होना आवश्यक है।
7. पलायन पर्वतीय भागों की प्रमुख समस्या है। पलायन पर अंकुश अति आवश्यक है, इससे क्षेत्रीय जनसंख्या को जीवन यापन के लिए सुख'–सुविधायें सुलभ कराना आवश्यक है।
8. क्षेत्र की सुख समृद्वि एवं खुशहाली के लिए जनसंख्या अध्ययन आवश्यक है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में देश के लिए बढ़ती जनसंख्या एवं संसाधनो का दुरूपयोग जटिल समस्या बनी हुई है। पर्यावरणीय प्रबन्धन के उद्देश्य को देखते हुए जनसंख्या के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पिथौरागढ़ जनपद की विषम भौगोलिक परिस्थिति, प्रतिकूल वातावरण से ही जनसंख्या के स्वरूप में असमानता देखने को मिली है। मुख्य केन्द्रों पर जनसंख्या का समूहीकरण है ओर स्थानान्तरण की प्रक्रिया प्रवल हो रही है, इसका मुख्य कारण भौतिक वादी सुखों की दोड, दूसरी और प्राकृतिक आपदाओं का कहर, जो पलायन को सक्रिय बनाने में प्रवल है, जिससे सुदूवर्ती गावों का खाली होना जारी है। यदि गॉव से शहर की ओर की दौड़ इसी तरह बनी रही तो भविष्य में यहाँ की अधिकांश आबादी शहरों में प्रवासित हो जायेगी। हमारे समाज, पारिवारिक प्रेम, सुख, सहयोग, सहभागिता, संस्कृति, रीति–रिवाज, परम्पराऐं, मातृ–भाषा, वेशभूषा प्राकृतिक सौन्दर्य से वंचित होकर अपने अतीत को भूल जायेंगे। जनसंख्या विवरण पर आने वाली असमानताओं का अध्ययन, समस्याओं का निराकरण एवं भावी योजनाओं से जनपद के विकास सुख–समृद्धि, सुदृढ़ता एवं खुशहाली के लिए अति आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. *चन्दना, आर0 सीः ए जियोग्रफी आफॅ पौपूलेशन, 1986 कल्यानी न्यू देहली ।*
2. *गोवारीकर, वीः पौपूलेशन ग्रोथ एण्ड डेबलपमैन्ट, 1992 आई एस सी ए पब्लिकेशन।*
3. *हीरालालः जनसंख्या भूगोल – 1999, वसुन्धरा प्रकाशन दाउदपुर गोरखपुर।*
4. *त्रिपाठी, रामदेवः 'जनसंख्या भूगोल' 2008, वसुन्धरा प्रकाशन 236 दाउदपुर गोरखपुर।*
5. *वाघल, किरनः जनांकिकी और भारत में जनसंख्या–1984 पुष्पराज प्रकाशन इलाहाबाद।*
6. *सेंन्सस हैण्ड बुक : वर्ष– 1961, 1971, 2001 पिथौरागढ़*
7. *साख्यिकीय पत्रिका जनपद पिथौरागढ़ 2008, 2009*